संयुक्तांक नवंबर 2024 • मूल्य : 50 रुपए वर्ष 16 ISSN 2347-6613

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

इस अंक में

ऑक्टेवियो पाज़, अहमद नदीम क़ासमी, रेनर मारिया रिल्के, अंतोन चेखव, कमला कान्त त्रिपाठी, राजेन्द्र दानी, सुधांशु गुप्त, योगेन्द्र दत्त शर्मा, हरेराम समीप, योगेन्द्र कृष्णा, डॉ विनोद सिन्हा, श्रीविलास सिंह आदि की रचनाएँ।

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

वर्ष 16 • अंक-3+4 • संयुक्तांक नवंबर 2024

संरक्षक

पंकज बिष्ट, अरविंद मोहन, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा

संपादक

डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया

कार्यकारी संपादक

श्रीविलास सिंह

प्रबंध संपादक

ठाकुर प्रसाद चौबे

परामर्श संपादक एवं सहयोग

ज्योति स्वरूप शुक्ल, डॉ. पूनम सिंह, रघुवीर शर्मा

कानूनी एवम् वित्तीय सलाहकार

सिद्धार्थ सिंह (अधिवक्ता), **महेन्द्र तेवतिया** (सी.ए.)

शब्द संयोजन

प्रियांशु

ग्राफिक स्टुडियो

अमित कुमार सोलंकी

संपादकीय संपर्क एवं कार्यालय:

79 ए, दिलशाद गार्डन, नियर पोस्ट ऑफिस,
दिल्ली- 110095
मो. 09810636082
E-mail: officeparindepatrika@gmail.com
E-mail: parindepatrika@gmail.com

मूल्य: **50** रु. (एक प्रति), वार्षिक: **500** रु. संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक: **600** रु. वार्षिक (विदेश): **50** यू.एस.डॉलर, आजीवन व्यक्तिगत: **5000** रु. संस्था: **6000** रु.

बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए

परिंदे पत्रिका का खाता 'पंजाब एंड सिंध बैंक' दिल्ली मे हैं। खाता का नाम-परिंदे है एवं खाता संख्या-04801100049782 है तथा इसका आई.एपफ.सी कोड *PSIB0000484* है।

संपादन-संचालन पूर्णत: अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

'परिंदे' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। ♦ **'परिंदे'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

यह अंक...

संपादकीय

4. पेरिस ओलम्पिक-पैरालम्पिक 2024, दिव्यांग जनों के प्रति बदलता सामाजिक दृष्टिकोण: **डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया**

धारावाहिक

6. ऑक्टेवियो पाज़ और द मंकी ग्रैमेरियन: **डॉ. बिनोद सिन्हा**

साक्षात्कार

10. **श्री अजित कुमार चौधरी से कुबेर कुमावत की बातचीत**

आलेख

21. विखंडन का विवेक और संयोजन का दायित्व-बोध: **अजित कुमार राय**
36. तुलसी का रूढ़िवाद: शुद्र और नारी के प्रति तुलसी की 'संकुचित' दृष्टि का यथार्थ: **कमलाकान्त त्रिपाठी**
56. अथातो कछुआ जिज्ञासा: **निशा तिवारी**

कहानी

14. कब्र के बाहर: **राकेश भ्रमर**
25. एकांत: **सुष्मिता बारीक**
28. परमेशर सिंह: **अहमद नदीम क़ासमी** (उर्दू)
51. के की डायरी: **सुधांशु गुप्त**
59. कछुए की तरह: **राजेन्द्र दानी**
65. ऋण: **गिरीमा घारेखान** (गुजराती)
68. झंकार: **मोना सिन्हा**
74. एक क्लर्क की मौत: **अंतोन चेखव** (रूसी)

साहित्य-संवाद

76. दिसम्बर की एक दोपहरी और सुनहरी घास: **गणेश गनी**

कविताएं/ग़ज़ल/दोहे

27. **विज्ञान व्रत**, 44. **योगेंद्र कृष्णा**, 46. **योगेन्द्र दत्त शर्मा**, 48. **तजेंद्र सिंह लूथरा**, 49. **रमेश प्रजापति**, 54. **रेनर मारिया रिल्के**, 72. हर्षवर्द्धन सिंह भदौरिया, 73. **हरेराम समीप**

किताबें/लघुकथा

79. प्रेम और सम्बन्ध के बिखराव की मार्मिक अभिव्यक्ति: **ऊषा यादव**
80. दिमाग को झनझना देने वाला व्यंग्य-संग्रह: **विक्रम सिंह**
81. कस्बाई जीवन की त्रासद गाथा: **कुमार मुकुल**
82. एक प्रेरक उदाहरण: **कुमार मुकुल**
82. जगह: **राघवेन्द्र प्रपन्न**

आवरण चित्र प्रसिद्ध भारतीय तेल चित्रकला कलाकारों में से एक जॉन फर्नांडीज (1951-2007) की पेंटिंग है, जिन्होंने लगभग सभी माध्यमों- पेंसिल, चारकोल, जल रंग आदि में काम है। उनका जन्म बीड, महाराष्ट्र में हुआ था। उनके पास रेखाओं, रूपरेखा, प्रकाश और छाया, रूपों और स्वर और रंगों की असाधारण समझ थी। उनके चित्रों में आकर्षक महिला रूप, सर्मपण और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किए गए थे।

पेरिस ओलम्पिक-पैरालम्पिक 2024, दिव्यांग जनों के प्रति बदलता सामाजिक दृष्टिकोण और पैरा-स्पोर्ट्स में भारत का उत्कृष्ट प्रदर्शन

जुलाई-अगस्त 2024 के पेरिस ओलम्पिक खेलों में भारत ने एक रजत और पांच कांस्य पदक जीते। इस प्रकार नीरज चोपड़ा, मनु भाकर, सरबजोत सिंह, स्वप्निल कुसाले, अमन सेहरावत और भारतीय हॉकी टीम ने पेरिस 2024 ओलंपिक में भारत को एक रजत और पांच कांस्य सहित छह पदक दिलाए, जिससे देश विश्व पदक तालिका में 71वें स्थान पर पहुंच गया। मनु भाकर ने 10 मीटर एयर पिस्टल शूटिंग में एक व्यक्तिगत और सरबजोत सिंह के साथ मिश्रित टीम में दूसरा कांस्य पदक जीता। स्वप्निल कुसाले ने 50 मीटर राइफल शूटिंग में तीसरा पदक जीतकर, इसे ओलंपिक के किसी एक संस्करण में किसी खेल में भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि बना दी। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पेरिस में कांस्य पदक के साथ अपनी टोकियो ओलंपिक 2020 की सफलता की बराबरी की। जैवलिन थ्रो में रजत पदक जीतने के बाद नीरज चोपड़ा सबसे सफल व्यक्तिगत ओलंपियन बन गए क्योंकि उन्होंने टोकियो ओलंपिक 2020 में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। अमन सहरावत कुश्ती में कांस्य पदक जीतकर भारत के सबसे कम उम्र के ओलंपिक पदक विजेता बने। पेरिस ओलंपिक 2024 मे भारत 6 संभावित पदकों से चूक भी गया, इनमें से अधिकांश पदक मामूली अंतर से गँवाये गये। महिला कुश्ती के 50 किलोग्राम प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लेने वाली विनेश फोगाट को 100 ग्राम ज्यादा वजन के कारण फाइनल प्रतिस्पर्धा से ठीक पहले अयोग्य घोषित कर दिया गया, जो कि दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ-साथ हमारे खेल और खिलाड़ियों के अव्यवसायिक प्रबंधन को दर्शाता है। 2024 पेरिस ओलंपिक खेलों में भारत का प्रदर्शन शानदार हो सकता था पर जिस तरह से हम विविध प्रतिस्पर्धाओं में पदक चूके हैं उससे ये लगता है कि भारत में अधिक व्यावसायिक खेल-प्रबंधन की और खिलाड़ियों में अधिक मानसिक दृढ़ता और परिपक्वता की आवश्यकता है।

अगस्त-सितंबर 2024 के पेरिस पैरालम्पिक 2024 खेलों में भारत ने 7 स्वर्ण, 9 रजत तथा 13 कांस्य पदक सहित कुल 29 पदक जीतकर इतिहास रच दिया। भारत ने टोकियो पैरालम्पिक 2020 में 19 पदक जीते थे पर इस बार देश 29 पदकों के साथ 170 देशों की सूची में 18 वें स्थान पर पहुँच गया है, यह इन प्रतिस्पर्धाओं में अब तक की भारत की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग है। अवनि लेखरा ने पेरिस पैरालंपिक में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में और सुमित अंतिल ने जैवलिन थ्रो में लगातार दूसरी बार स्वर्ण जीतकर इतिहास रचा है, नीतेश कुमार ने बैडमिंटन में तो हरविंदर सिंह ने तीरंदाजी में पहली बार भारत के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया है, धर्मवीर ने पुरुष क्लब थ्रो में, प्रवीण कुमार नें हाई जंप में और नवदीप सिंह नें एक अन्य जैवलिन थ्रो प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीते हैं।

भारत ने ओलंपिक खेलों के लिए 110 खिलाड़ियों का दल भेजा था, जिसमें एक रजत और पांच कांस्य पदक यानी कुल 6 पदक प्राप्त हुए और 6 खिलाड़ियों ने चौथा स्थान प्राप्त किया जबकि पैरालंपिक खेलों में भारत की तरफ से 84 खिलाड़ी ही गए थे और इन खिलाड़ियों ने ओलंपिक से चार गुना से भी ज्यादा पदक प्राप्त किये। वैसे तो दोनो तरह की प्रतियोगिताओं की तुलना सही नहीं है क्योंकि दोनो तरह की प्रतियोगिताओं में स्पर्धा का स्वरुप अलग-अलग होता है, ओलंपिक में 32 और पैरालंपिक में 22 खेल शामिल हैं, ओलंपिक में 329 और पैरालंपिक में 549 पदक देने की व्यवस्था है और जहाँ एक तरफ ओलंपिक में 204 टीमें शामिल हुई थीं वहाँ पैरालंपिक में केवल 170 टीमों ने ही भाग लिया, पर ध्यातव्य ये है कि पैरा स्पोर्ट्स के दिव्यांग खिलाड़ी हर तरह की सामाजिक आर्थिक उपेक्षाओं से अविचलित रहकर, कहीं अधिक दृढ़ संकल्प, साहस और शारीरिक के साथ-साथ मानसिक शक्ति तथा जिजीविषा का परिचय देते हैं, अपने प्राकृतिक अंगों के अभाव और विकृति के बावजूद पैरास्पोर्ट्स के खिलाड़ियों की जीवन-यात्रा किसी युद्ध से कम नहीं है। ध्यातव्य है कि विविध अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदकों की संख्या मोटे तौर पर ये दर्शाती है कि उस देश की सभ्यता और संस्कृति में खेलों के प्रति कितना आकर्षण है, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता कैसी है और वहाँ के खिलाड़ियों में सतत प्रयास कर अपने देश के मान और गौरव को आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प कितना है। और कहना न होगा कि पिछली कुछ ओलंपिक और पैरालंपिक प्रतियोगिताओं में भारत लगातार अपना प्रदर्शन बेहतर कर रहा है।